CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

ग्रामीण और शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन (मध्य प्रदेश के नीमच जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डा. जयदीप माहर, *प्राचार्य*

श्रीमती ज्योति जोशी, *सहायक प्राध्यापक*

एमवीएम टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, प्रतापगढ़, राजस्थान
Email - panthijaydeep@gmail.com, *Mob.- 9827710305*

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य में बालकों के संबध में नैतिक मूल्य के प्रभाव को बालक-अभिभावक सबंध से प्रभावित होने वाले कारकों के रूप में चुना गया है। वर्तमान समय मे भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के गिरते स्तर के अन्तगर्त इसका अध्ययन करना प्रांसगिक है।

मुख्य शब्द : *बालक-अभिभावक सबंध, भारतीय समाज, नैतिक मूल्य आदि.*

प्रस्तावना

बालक के व्यक्तित्व को दो पहलु अधिक प्रभावित करते है। एक बालक का पारिवारिक वातावरण दुसरा विद्यालयी वातावरण।

प्रस्तुत शोध में पारिवारिक वातावरण में बालक अभिभावक सबंध पर विशेष बल दिया गया है। क्योंकि मातापिता का अपने बच्चे पर सीधा - तथा प्रभावी प्रभाव पड़ता है।

आज के प्रतियोगी युग में जंहा एक और बढ़ती जनसंख्या तथा दुसरी और भष्टाचार तथा रिष्वतखोर है। ऐसी स्थिति में भी मातापिता - अपने बच्चों को दुसरे बच्चों से अधिक प्रगतिशील देखना चाहतें है। इसी स्थिति में बच्चे भी अभिभावक से अपेक्षा रखतें हैं कि वै उन्है समझे उनके विचारों, उनकी भावनाओं तथा उनके निर्णयों का सम्मान करें। बालक की स्व प्रगति में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण हाथ रहता है।

नैतिक मूल्य

नैतिक मूल्य वे सांस्कृतिक या व्यक्तिगत धारणा या आदर्श है। जिसके द्वारा वस्तुओं अथवा घटनाओं या जीवन शैली के साथ तुलना व्यक्तिगत की जा सकती है।

नैतिक मूल्य लक्षण या गुण कहे जा सकते है, जिसके प्रति एक व्यक्ति अथवा सम्पूर्ण समाज के व्यवहार को निर्देषित किया जाता है।

ग्रामीण परिवेश

ऐसा वातावरण जो किसी सीमित क्षेत्र या गांव से संबधित हो, ऐसे वातावरण में रहने वाले सभी व्यक्ति जिनमें विद्यार्थी भी शामिल हो, ग्रामीण परिवेश के अन्तर्गत माने जाते है। शहर की इसे छोटी इकाई भी कहा जा सकता है।

शहरी परिवेश

ऐसा वातावरण जो बड़े शहरों या गांव से या किसी क्षेत्र विशेष से किसी भी रूप में बड़ा या विस्तृत हो, ऐसा परिवेश जिसमें आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र विस्तृत रूप से फैले हुए हो, ऐसे परिवेश मे आने वाले या रहने वाले छात्र शहरी परिवेश के कहलाते है।

अध्ययन का औचित्य

भारतीय संस्कृति सभी संस्कृतियों में महान है विविध संस्कार से जिनमें कुछ संस्कार जन्म से पहले ही शुरू हो जाते है, उसे अवगत कराया जाता है। वस्तुतः हम यह कह सकते है जिस बालक के व्यक्तित्व को संस्कारों नैतिक मूल्यों परम्पराओं तथा प्रेम से इस प्रकार विकसित करना की वह बालक न सिर्फ परिवार समाज और देश को अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के हितार्थ करें। मनोवैज्ञानिक के अनुसार बालक का सर्वाधिक विकास 0-8 वर्ष की आयु में होता है। इस अवस्था में बालक अभिभावक के साथ अभिभावक का बालक के साथ सबसे

अधिक सम्पर्क होता है। उस अवस्था में जैसा माता-पिता अपने बच्चों के प्रति संबधं रखगंे बच्चा वैसा ही व्यक्तित्व पाने का प्रयास करता है। जो माता-पिता अपने बच्चों के साथ इस अवस्था में प्रेम ममता स्नेह तथा विश्वास के साथ व्यवहार करते है। तथा साथ ही शिष्टाचार मानवीय गुण तथा नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाते है। वे बच्चें दूसरें बच्चों से अधिक विकसित परिपक्व तथा देश के योग्य नागरिक बनतें है।

संबंधित पूर्व शोध का अध्ययन

1. पठान गोपाल चन्द्र)1994) विभिन्न व्यक्तिगत मूल्यों के संबंध में स्कूली छात्रों के नैतिक मूल्य समस्याए यह अध्ययन 10 व्यक्तिगत मूल्यों के साथ नैतिक मूल्यों के बीच संभावित संबंध पता लगाता है।
2. नैतिक निर्णय और सौन्दर्य मूल्यों के मध्य कोई महत्वपूर्ण पारस्परिक संबंध नही था।
3. प्रमुख खोजरिक संबंधोअधिकांश उत्तरदाताओं ने पारिवा -ं के जांच परिवार के निर्णय में बच्चों की राय जानने वाले माता-पिता के लिए प्यार और सम्मान बच्चों की भावनाओं की पिता बच्चों के सबंध के प्रति दृष्टिकोण की-अज्ञानता माता8 वस्तुओं पर सहमती व्यक्त की इन मदों में मातापिता से बात - प्राप्त कर करने पर उच्च और निम्नने वाले लडके और लडकियां भी शामिल है।
4. पाण्डेय शशीकरण 1996)) अभिभावक बच्चे के संबंध पर स्कूली वातावरण का प्रभाव।
5. श्री वास्तव R.K,1995)) कक्षा 5 के विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक बच्चे के संबंध की धारणा का प्रभाव

समस्या कथन

ग्रामीण और शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन। (म(के नीमच जिले के संदर्भ में .प्र.

अध्ययन के उद्धेश्य

यह जानने के लिए कि क्या अभिभावक संबंधो का छात्र के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। कुछ उद्धेश्य निर्धारित किये गये है।

1. ग्रामीण परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन
2. शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन

न्यादर्श

न्यादर्श से तात्पर्य शोधकत्र्ता द्वारा अपने उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु जनसंख्या का अध्ययन किया जाता है। किंतु पूरी जनसंख्या का परीक्षण करना संभव नही है।

\अतः उनमें से कुछ चुने हुए व्यक्तियों पर परीक्षण करके अन्य के बारे में निष्कर्ष निकालना ही अध्ययन या शोध का न्यादर्श कहलाता है।

उपर्युक्त लघु शोध प्रबंध के उद्धेश्य की पूर्ति हेतु सभी विद्यार्थी जो आयु वर्ग 13-14 वर्ष के आते है।

अतः नीमच जिले के 2 (दो विद्यालय शासकीय माध्यमिक विद्यालय (की कक्षा8 वीं के 100 छात्र एवं 100 छात्राऐं जिसमें शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र 50-50 छात्र एवं ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र 50-50 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

न्यादर्श (200)

छात्र)100) - 50 शहरी 50 ग्रामीण

छात्राऐं)100) - 50 शहरी 50 ग्रामीण

न्यादर्श का चुनाव

विद्यालयों में अनेक विद्यार्थी अध्ययन करते है जिनमें कुछ शहरी तथा कुछ ग्रामीण है। नैतिक मूल्यों पर शहरी व ग्रामीण परिवेश का भी प्रभाव पड़ सकता है। अतः इसका भी अध्ययन किया गया।

उपकरण

प्रत्येक शोध कार्य की महत्ता उपकरण पर निर्भर है। क्योंकि उनकी उपयुक्तता, वैधता, विश्वसनीयता पर ही पक्षों की विश्वसनीयता एवं वैधता निर्भर करती है। उसमें प्राप्त निष्कर्षो की क्षमता द्वारा व्यवहारिकता व उपयोगिता निर्धारित होती है। अतः प्रत्येक शोधकार्य में उपयुक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है। इस शोधकार्य में दो उपकरण प्रयुक्त किये गये है।

1. ग्रामीण परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन
2. शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन

प्रयुक्त विधि

अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है। क्योंकि समुह की सामान्य विशेषताओं का संरचनात्मक वर्णन करने के लिए समुहो अथवा घटनाओं की सहायता से उस परिस्थिति में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की जाती है। तथा इसकी सहायता से बालक अभिभावक संबधो का मूल्यांकन किया जा सकता है

पदत्तों का सारणियन विश्लेषण

1.ग्रामीण परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्यय

परिवेश	समुह	न्यादर्श संख्या N	मध्यमान X	प्रा. विचलन	T मूल्य
ग्रामीण	छात्र	50	527-26	38-68	0-812
	छात्राऐं	50	536-44	52-21	

X 58 के लिए + का मान त्रुटी के 0.05 स्तर पर =2.002 सारणी I (a) तथा III (a) के अनुसार प्राप्त + मूल्य 0.812 अपेक्षित मूल्य से कम है। अतः प्राकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः लिंगभेद का ग्रामीण परिवार में बालकों पर बालक अभिभावक संबंध का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

2 शहरी परिवेश के बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन

परिवेश	समुह	न्यादर्श संख्या N	मध्यमान X	प्रा. विचलन	T मूल्य
शहरी	छात्र	50	597.42	29.27	0.770
		50	569.20	54.68	

X 58 के लिए + का मान त्रुटी के 0.05 स्तर पर =2.002 सारणी 2 (a) तथा (a) के अनुसार प्राप्त + मूल्य 0.770 अपेक्षित मूल्य से कम है। अतः प्राकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः लिंगभेद का शहरी वातावरण के बालकों पर बालक अभिभावक संबंध का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

निश्कर्ष

शोध द्वारा उक्त कथन सही जान पड़ता है। ग्रामीण परिवेष की तुलना में शहरी परिवेष के बालकों को नैतिक मूल्य कम या अधिक रूप से प्रभावित न कर अपितु समान रूप से प्रभावित करते है। क्योंकि ग्रामीण वातावरण में अभिभावक बालकों के संबंध तो समान रहता है। लेकिन कुछ बातों में उनमें अंतर माना जाता है। लेकिन शहरी परिवेश में बालिका में नगण्य अंतर माना जाता है। फलस्वरूप उनमें नैतिकता भी समान रूप से विकसित होती है। वर्तमान युग में लड़के और लड़कियों दोनो को ही मातापिता के सम्मान स्नेह-, सुरक्षा व संरक्षण प्राप्त होता है। और यह उनके सुसमायोजन के लिए आवश्यक है, इसलिए बालकों पर बालक अभिभावक संबंध का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

जहाँ एक और समानता की बात करके लड़के लड़कियों मे कोई भेद न करके माता-पिता उन्है समान रूप से मानते है। वही वे अपने बच्चों से समान प्रतिक्रिया भी चाहते है। अभिभावक अपने बच्चों की षिक्षा दिक्षा संस्कार तथा उनमें भावनात्मक गुणों को समान रूप सें देते या प्रदर्षित करते फलस्वरूप आज के समय ।

सुझाव

1. बालक अभिभावक संबंधो के आधार पर बालकों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
2. बालक अभिभावक संबधों के आधार पर बालको की विभिन्न ज्ञानात्मक योग्यताओं अध्ययन किया जा सकता है।
3. बालक अभिभावक संबंधो के आधार पर बालकों में सुरक्षा व असुरक्षा की भावना का भी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. राजस्थान के शैक्षिक अनुसंधान
2. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान ड़ा प्रीति -, ड़ा एसश्री .एन. वास्तव विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 655-359
3. Best J.W., J.V Kohn : Research in Education, Prentice Hall of India New Delhi P.8.26 220-222
4. Boring, E.G : A History of Educational Psychology Bombay 1966
5. Eysenck N.J.et.at : Encyclopaedia of Psychology London 1972
6. Rao , Dr. Nalini : Manual For Parent Child Relationship Scale.
7. Sullivan H.S (1953) : The Interpersonal Theory of Psychiatry.